भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खण्ड–XXVIII अंक–1 15 जनवरी, 2023

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति। तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।

जो कोई भक्त मेरे लिये प्रेम से पत्र, पुष्प, फल, जल आदि अर्पण करता है, उस शुद्ध बुद्धि निष्काम प्रेमी भक्त का प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह पत्र–पुष्पादि मैं सगुण रूप से प्रकट होकर प्रेमपूर्वक खाता हूँ। **श्रीमद्भगवद्गीता 9/26**

बधाई (पदोन्नति)

स्थापना अनुभाग–1 से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार निम्नलिखित संकाय सदस्यों को उनके नाम के आगे दिए गए पद के लिए चयनित/पदोन्नत किया गया है–

संकाय सदस्य का नाम	पिछला पदनाम	नया पदनाम	विभाग/केन्द्र	वेतनमान
 **प्रो. रमेश नारायणन**	सह प्रोफेसर	प्रोफेसर	ऊर्जा विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग	1,59,100–2,20,200 (लेवल–14ए)
 **प्रो. संदीप सुकुमारन**	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	वायुमंडलीय विज्ञान केंद्र	1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)
 **प्रो. सायंतन पारिया**	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	रसायन विज्ञान विभाग	1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)

''संविधान भी एक सफर है''

श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित राज्य सभा टी.वी. पर प्रसारित सीरियल ''संविधान भी एक सफर है'' को समय निकाल कर अवश्य देखें। इस सीरियल के 10 एपिसोड में पूरे संविधान बनने की प्रक्रिया को दिखाया गया है।

यूट्यूब लिंक–
https://www.youtube.com/watch?v=0U9KDQnlsNk

कुलसचिव का कार्यकाल विस्तार

स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति संख्याः IITD/E-2/2022/106330 दिनांक 23.12.2022 के अनुसार कुलसचिव महोदया **डॉ. दीपिका भास्कर** का प्रतिनियुक्ति कार्यकाल दिनांक 29.12.2022 से विद्यमान नियमों व शर्तों पर आगामी 6 महीनों के लिए बढ़ा दिया गया है।

युवाओं के लिए संदेश

(स्वामी विवेकानंद जयंती)



19 नवंबर, 1894 को स्वामी विवेकानंद ने न्यूयार्क से भारत के युवा भक्तों आलासिंगा और पेरुमल को पत्र लिखा था। प्रस्तुत हैं उसके कुछ संपादित अंशः–

हे वीर हृदय युवकों, परोपकार ही जीवन है, परोपकार न करना ही मृत्यु है। सबके लिए तुम्हारे हृदय में दर्द हो–निर्धन,

पददलित मनुष्यों के दुख का अनुभव करो। संवेदना से तुम्हारा हृदय भरा हो। मेरा मूल मंत्र है 'कोशिश करते रहो'। जब चारों ओर अंधेरा था, तब भी मैं कोशिश करने को कहता था, अब तो कुछ प्रकाश नजर आ रहा है, अब भी यही कहूंगा कि कोशिश करते रहो। ना धन काम आता है, ना यश और ना ही विद्या। चरित्र ही कठिनाइयों की संगीन दीवारें तोड़कर अपना रास्ता बना लेता है। नेतृत्व करते समय सबके दास बनो, निस्वार्थ रहो। धैर्य रखो, तभी सफलता तुम्हारे हाथ आएगी।

साभार–दैनिक जागरण
दिनांक–10.1.2023

बधाई

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त विज्ञप्ति संख्याः IITD/AREG/2022/102806 दिनांक 13.12.2022 के अनुसार विभागीय पदोन्नति समिति (DPC) ने निम्नलिखित स्टाफ सदस्यों को दिनांक 13.12.2022 से **तकनीकी अधिकारी (लेवल–10)** के रूप में पदोन्नत किया हैः–

क्र.सं.	नाम (कर्मचारी कोड सं.)	वर्तमान पद	पदोन्नत पद (वेतन लेवल)
1.	श्री अनिल शर्मा (26035)	वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	तकनीकी अधिकारी (लेवल–10)
2.	सुश्री रमा (26048)	वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	
3.	श्री राज कुमार तेजानिया (26278)	वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	
4.	सुश्री नीरू बाला असिजा (26108)	तकनीकी अधीक्षक	
5.	सुश्री वंदना अहलूवालिया (26111)	तकनीकी अधीक्षक	
6.	श्री सबर सिंह चौहान (26158)	तकनीकी अधीक्षक	

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त विज्ञप्ति संख्याः IITD/AREG/2022/101492 दिनांक 08.12.2022 के अनुसार विभागीय पदोन्नति समिति (DPC) ने निम्नलिखित स्टाफ सदस्यों को दिनांक 7.12.2022 से उनके नाम के आगे दर्शाए गए पद पर पदोन्नत किया हैः–

क. प्रशासनिक संवर्ग

अधीक्षक

क्र.सं.	नाम (कर्मचारी कोड)	वर्तमान पद	पदोन्नत पद (वेतन लेवल)
1.	सुश्री सुनीता डांग (25793)	कनिष्ठ अधीक्षक	अधीक्षक (लेवल–08)
2.	सुश्री शशि बाला (25806)	कनिष्ठ अधीक्षक	
3.	सुश्री ज्योति ग्रोवर (25805)	कनिष्ठ अधीक्षक	
4.	सुश्री नीलम सिंधवानी (25807)	कनिष्ठ अधीक्षक	
5.	सुश्री मीना कुमारी (25808)	कनिष्ठ अधीक्षक	
6.	सुश्री सुषमा वत्स (25809)	कनिष्ठ अधीक्षक	

कनिष्ठ अधीक्षक

क्र.सं.	नाम (कर्मचारी कोड)	वर्तमान पद	पदोन्नत पद (वेतन लेवल)
1.	सुश्री अनीता रानी (26442)	वरिष्ठ सहायक	कनिष्ठ अधीक्षक (लेवल–06)
2.	श्री मनोज कुमार (26443)	वरिष्ठ सहायक	
3.	श्री पुनीत नागपाल (26319)	वरिष्ठ सहायक	
4.	श्री संदीप अरोड़ा (26440)	वरिष्ठ सहायक	

वरिष्ठ सहायक

क्र.सं.	नाम (कर्मचारी कोड)	वर्तमान पद	पदोन्नत पद (वेतन लेवल)
1.	श्री मनबर सिंह (26405)	कनिष्ठ सहायक	वरिष्ठ सहायक (लेवल–05)
2.	सुश्री अनिता रानी (26712)	कनिष्ठ सहायक	
3.	श्री कपिल कुमार (26722)	कनिष्ठ सहायक	
4.	सुश्री मीनाक्षी शर्मा (26752)	कनिष्ठ सहायक	
5.	सुश्री रुचि सनोत्रा (26865)	कनिष्ठ सहायक	
6.	सुश्री रिचेल पॉल (26885)	कनिष्ठ सहायक	

ख. तकनीकी प्रयोगशाला संवर्ग

तकनीकी अधीक्षक

क्र.सं.	नाम (कर्मचारी कोड)	वर्तमान पद	पदोन्नत पद (वेतन लेवल)
1.	श्री मुन्ना लाल (26167)	कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	तकनीकी अधीक्षक (लेवल–08)
2.	श्री धर्मेंद्र जेटली (26168)	कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	
3.	मो. नौशाद हसन (26600)	कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	
4.	श्री सुनील कुमार रुहेला (26626)	कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	
5.	श्री देवेंद्र सिंह (26627)	कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	
6.	श्री विशेष कुमार (26633)	कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	
7.	श्री राजीव कुमार दहिया (26646)	कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	
8.	श्री अमित बुंदेला (26648)	कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक	

कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक

क्र.सं.	नाम (कर्मचारी कोड)	वर्तमान पद	पदोन्नत पद (वेतन लेवल)
1.	श्री परमिंदर सिंह (25735)	वरिष्ठ मैकेनिक	कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक (लेवल–06)
2.	श्री याद राम (26297)	वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक	
3.	श्री जुगती राम (26258)	वरिष्ठ मैकेनिक	
4.	श्री होराम (26285)	वरिष्ठ मैकेनिक	

ग. लेखा/लेखापरीक्षा संवर्ग

लेखा अधिकारी

क्र.सं.	नाम (कर्मचारी कोड)	वर्तमान पद	पदोन्नत पद (वेतन लेवल)
1.	श्री जसविंदर सिंह कोहली (25911)	कनिष्ठ लेखा अधिकारी	लेखा अधिकारी (लेवल–08)

घ. संपदा एवं निर्माण (तकनीकी) संवर्ग

सहायक अभियंता

क्र.सं.	नाम (कर्मचारी कोड)	वर्तमान पद	पदोन्नत पद (वेतन लेवल)
1.	सुश्री उपासना गुप्ता (26776)	कनिष्ठ अभियंता	सहायक अभियंता (लेवल–08)*

* पूर्णतः स्थानापन्न स्थिति में पदोन्नत हैं।

हिन्दी कक्ष की ओर से सभी स्टाफ सदस्यों को उनकी पदोन्नति के लिए बधाई एवं शुभकामनाऐं। आशा है हम सभी सहयोगी भावना से संस्थान के समग्र विकास के लिये प्रसन्नता से योगदान करेंगे तथा संस्थान को नई ऊँचाइयों तक ले जाने के लिए प्रयासरत रहेंगे।

आजादी का अमृत महोत्सव

मानव सेवा की अद्भुत मिसाल

स्वामी विवेकानंद के जीवन और उपदेशों का पुनरावलोकन कर रहे हैं –विराग गुप्ता

दक्षिण भारत और दक्षिण एशिया में आई विनाशकारी सुनामी लहरों से पीड़ित मानव समाज को स्वामी विवेकानंद के जीवनदर्शन की आवश्यकता है, जिनकी 140वीं जयंती मनाई गई। दक्षिण भारत में अपने प्रवास के दौरान स्वामी जी ने सेवा, साहस और मानवता के प्रति जो विचार व्यक्त किए वे किसी भी समाज की अमूल्य धरोहर के समान है। सुनामी लहरों का प्रकोप हमें स्वामी जी के जीवन और उपदेशों के पुनरावलोकन के लिए प्रेरित करता है। बचपन में अध्यापक द्वारा पढ़ाए गए पाठ को याद करते हुए स्वामी जी अपने संस्मरणों में लिखते हैं ''गांव की भलाई के लिए मनुष्य अपने कुल को छोड़ दे। देश की भलाई के लिए मनुष्य अपने गांव को छोड़ दे। मानव समाज की भलाई के लिए मनुष्य अपने देश को छोड़ दे। विश्व की भलाई के लिए मनुष्य अपना सर्वस्व छोड़ दे।''

उनके व्यक्तित्व को समझ कर ही श्रीरामकृष्ण ने कहा था कि नरेन्द्र साधारण मनुष्य नहीं है। वह जन्म से ही नित्यसिद्ध ईश्वर कोटि के असाधारण व्यक्ति है, जो अध्यात्मनिष्ठ भारत का संदेश लेकर विश्व में अवतरित हुए हैं। अमेरिका में आध्यात्मिक विजय यात्रा के पश्चात कोलंबो, कैंडी, अनुराधापुरम, रामेश्वरम, मदुरई, 'त्रिचिनापल्ली और मद्रास में 1897 के नौ दिवसीय प्रवास में विक्टोरिया हॉल के विशाल सभागृह में उनका व्याख्यान हुआ, जिसके विषय थे मेरी भावी योजना, वेदांत का व्यावहारिक उपयोग और भारत का भविष्य आदि। वह लोगों से कहते हैं 'मेरे देशभक्त लोगों ! अपने से यह प्रश्न पूछो कि क्या तुम्हारी आत्मा में अपने उन लाखों लोगों के लिए हमदर्दी है, जो सदियों से भूखे नंगे हैं ? क्या उन्हें भूख से तड़पता देखकर तुम्हारा हृदय पसीजता है ? यदि हाँ, तो समझो तुम्हारी देशभक्ति सच्ची है। तुम्हारी साधना सफल होगी। अन्यथा तुम्हारी देशसेवा स्वार्थ है। उससे देश का कल्याण नहीं होगा''। स्वामी विवेकानंद के जीवन में मानव सेवा के संकल्प का व्यावहारिक सूत्रपात गुरु श्री रामकृष्ण एवं श्री सुरेन्द्रनाथ मिश्र के निधन के पश्चात हुआ। उनके मन में फिर वही संघर्ष चल पड़ा कि वह पूर्णतः आध्यात्मिक जीवन और ज्ञान का आनंद लें अथवा मानव सेवा में जीवन अर्पित करें। भौतिक सुखों का उत्सर्ग तो वह कर ही चुके थे इसलिए आत्मिक आनंद का मार्ग उनके लिए खुला था। कई बार वह इस आनंद में ऐसे खो जाते थे कि उन्हें भौतिक अस्तित्व का ज्ञान ही नहीं रहता था, किंतु थोड़ी ही देर में उन्हें अपने चारों और फैली हुई वेदना, लालसा और पीड़ा का स्मरण आता था। अपने गुरु श्रीरामकृष्ण के ये शब्द याद आते थे– ''तुम्हारा जीवन तुम्हारे आनंद के लिए नहीं, मानव सेवा के लिए है।'' मानव जीवन के और परोपकार के संदर्भ में स्वामी जी का वेदांत के माध्यम से चिंतन मैडम एम्मा कालवे को लिखे पत्र में निहित है।

वह लिखते हैं ''एक दिन एक बूंद महासागर में गिर गई। वहां वह रोने लगी,जैसे तुम रो रही हो। सागर हंसा, उसने कहा रोती क्यों हो? जब तुम मुझसे आकर मिली थी तो तुम्हारे साथ तुम्हारी अनंत साथी बूंदे भी आई थीं। उन्हीं से मेरा अस्तित्व है। तुब सब मिलकर ही सागर बने हो। अगर तुम मुझे छोड़कर जाना चाहती हो तो जाओ, सूर्य की किरणों के साथ उठकर बादल बन जाओ और फिर वहां से फिर तुम उतरकर मेरे संग आ सकती हो। आओ अब प्यासी धरती की प्यास बुझाकर मेरे पास आ जाओ।'' 1897 की गर्मी में स्वामी विवेकानंद और उनके शिष्यों ने बंगाल के मुर्शीदाबाद जिले में दुर्भिक्ष पीड़ित सैकड़ों गरीबों को पांच मास तक अन्न पहुंचाया और उनकी सेवा की। अनाथ बालकों के लिए मोहल्ले में अनाथ आश्रम स्थापित किया। अगले वर्ष 1898 में कलकत्ता में हैजा फैलने से स्वामी जी ने एक बड़ा मैदान किराए पर लेकर उसमें उपचार शिविर लगाया और खुद निर्धन बस्ती में जाकर रहने लगे, जहां उनके स्वयंसेवक रोग मुक्ति और सफाई का काम देखते थे सारे कार्य का प्रबंध भगिनी निवेदिता एवं स्वामी शिवानंद देखते थे। अप्रैल 1899 में स्वामी जी ने विद्यार्थियों की सभा बुलाई और विपत्ति के समय उनके यथोचित कर्तव्य का स्मरण कराया। स्वामी जी स्वयं दल बनाकर पीड़ितों की खोज खबर रखते थे और आरोग्य शिक्षा संबंधी परचे बाँटने में व्यस्त रहते थे। सफाई का काम स्वयं करके वह दूसरों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करते थे।

इस अभियान में बीमार होने पर स्वास्थ्य लाभ करते हुए उन्होंने लिखा ''आंदोलन प्रारंभ हो गया है। वह कभी थमेगा नहीं। मेरे मन में केवल एक चिंता प्रज्ज्वलित थी। वह यह कि भारतीय जनसमुदाय के उत्थान के लिए संगठन तैयार कर दूं और वह मैंने किसी सीमा तक कर ही दिया। तुम्हारा हृदय देखकर प्रफुल्लित होगा कि मेरे लड़के दुर्भिक्ष, रोग और क्लेश के मध्य कैसे काम कर रहे हैं। वे विसूचिका ग्रस्त अछूतों की शैय्या के पास बैठकर उनकी सुश्रूषा करते हैं, क्षुधा पीड़ित चांडालों को भोजन देते हैं। ईश्वर मेरी और उनकी सबकी सहायता करता है। मेरी मोक्ष की इच्छा अब नहीं रही। मुझे तो अपने सेवा भाव संगठन को ही सशक्त बनाना है। यही मेरा लक्ष्य है। जब वह पूरा हो जाएगा तो लक्ष्य पूरा होने का संतोष मानूंगा।'' स्वयंसेवकों को व्यवहार में सतर्कता बरतने की सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि उच्च स्थान पर खड़े होकर और हाथ में कुछ पैसे लेकर यह मत कहो कि ऐ भिखारी, आओ यह लो, परंतु इस बात का उपकार मानो कि तुम्हारे सामने वह गरीब है, जिसे दान देकर तुम अपने आप की सहायता कर सकते हो। पाने वाले का सौभाग्य नहीं, किंतु वास्तव में देने वाले का सौभाग्य है। उसका आभार मानो कि उसने तुम्हें संसार में अपनी उदारता और दया प्रकट करने का अवसर दिया और इस प्रकार तुम शुद्ध और पूर्ण बन सके।'' अगस्त 1897 में हिमालय की चोटियों से उन्होंने देशवासियों के लिए क्रांतिकारी संदेश दिया ''संसार का इतिहास उन थोड़े से पुरुषों का इतिहास है, जिन्हें अपने में विश्वास रहा। साहस करो। साहस व्यक्ति का श्रेष्ठतम गुण है सदैव संपूर्ण सत्य कहने का साहस करो। बिना भेदभाव के बिना भीति के अदूषित सत्य प्रत्येक से कहने का साहस करो। केवल अपना मोक्ष चाहोगे तो नरक में गिरोगे। दूसरों का मोक्ष चाहो, लेकिन सेवा के लिए नरक भी भोगना पड़े तो अपनी मुक्ति द्वारा अर्जित स्वर्ग से भी उत्तम है। श्री रामकृष्ण भूतल पर आए और विश्व को जीवन दान कर गए। मैं भी आत्मोत्सर्ग करूंगा, तुम भी करोगे, तुम सब में प्रत्येक का यही पथ होगा।''

दुःख में सुख और कष्ट में आनंद की यात्रा उनके 6 दिसंबर, 1899 को मिस मार्गरेट नोबल को लिखे पत्र के इस अंश में स्पष्ट होती है ''कुछ मनुष्यों का जन्म ही कष्ट उठाने के लिए होता है। जब उन्हें अपना कोई कष्ट न हो तो वे दूसरों का कष्ट अपने सिर पर उठा लेते हैं। प्रकट रूप से तो सभी के जीवन का लक्ष्य आनंद लेना होता है, किंतु यदि किसी को कष्ट में ही आनंद की प्रतीति हो जाए तो वह क्या करे ? है तो यह विचित्र बात, किंतु सत्य।'' रामकृष्ण मिशन की स्थापना के बाद अलमोड़ा में स्वास्थ्य लाभ करते हुए उन्होंने लिखा ''मेरी यही कामना है कि भारत में मानव कल्याण और सच्ची सेवा का ऐसा सूत्रपात हो जाए, जो कभी टूटे नहीं। ऐसी कार्यशैली बन गई तो मैं आश्वस्त होकर संसार से विदा लूंगा। अंतिम समय में भी मेरी यही प्रार्थना होगी कि मैं बार–बार मनुष्य जन्म ग्रहण करूं और दूसरों के दुःख दूर करने का अवसर मुझे मिले।''

साभार–दैनिक जागरण
दिनांक–13 जनवरी, 2005

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com